RAWATSAR P.G. COLLEGE
'Sanskriti Ka Badlta Swaroop Aur AI Ki Bhumika' (SBSAIB-2025)
DATE: 25 January 2025
International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
Multidisciplinary, Multilingual, Indexed, Double-Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal, Impact factor (SJIF) = 8.152

कृत्रिम बुद्धिमत्ता के सन्दर्भ में विज्ञान नैतिकता और धार्मिकता

डॉ ज़रफिशा ज़ैदी, सह-आचार्य, दर्शनशास्त्र, सम्राट पृथ्वीराज चौहान राजकीय महाविद्यालय, अजमेर

प्रस्तुत शोध पत्र में कृत्रिम बुद्धिमत्ता के संदर्भ में विज्ञान नैतिकता और धार्मिकता की अवधारणाओं एवं उनके अंतर संबंधों पर विचार प्रस्तुत किया गया है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता का अर्थ है, मशीन जो अब मानव की सबसे बड़ी विशेषता को हासिल करने के लिए प्रयासरत है। कंप्यूटर साइंस की एक ऐसी खोज है कृत्रिम बुद्धिमत्ता जिसमें ऐसे कंप्यूटर आ चुके हैं जो मनुष्य की भाषा बोल सकते हैं। सुन सकते हैं। समझ सकते हैं। सैकड़ों आंकड़ों को इकट्ठा करके, उनका विश्लेषण करके तुरंत आपको निर्णय भी दे सकते हैं। सुझाव प्रस्तुत कर सकते हैं।[1] प्राणी जगत में मनुष्य अन्य सभी प्राणियों से इसलिए श्रेष्ठ माना गया कि उसके पास सोचने और समझने की क्षमता है और जो सोचता है उसको भाषा में अभिव्यक्त कर पाने की सामर्थ्य है।इसी क्षमता और सामर्थ्य को अब मशीन हासिल करने की तैयारी में है। काफी हद तक कर चुकी है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता पर पूरा विश्व जहां एक ओर विज्ञान की महान उपलब्धि पर गौरवान्वित है। प्रशंसा कर रहा है। इसके उपयोगो पर चर्चा कर रहा है और वैज्ञानिक इसको और अधिक विकसित करने की दिशा में प्रयास कर रहे हैं वही मानव समाज का एक हिस्सा ऐसा भी है जो इस उपलब्धि को संशय की दृष्टि से देख रहा है। मनुष्य की सबसे विशिष्ट क्षमता अब मशीन प्राप्त कर रहा है तो क्या अब मानवीय समाज पूरी तरह मशीनों पर निर्भर होने जा रहा है या उसका यांत्रिकीकरण जो दिन प्रतिदिन बढ़ा अब अपनी पराकाष्ठा पर पहुंच रहा है। भाषिक अभिव्यक्ति जब मशीन हासिल कर लेगी तो इससे होने वाले नकल, अपराध गोपनीयता, सुरक्षा आदि मुद्दे भी हमारे सामने हैं। हम देख चुके हैं कि हमारे पूर्वज शारीरिक श्रम करने के कारण मजबूत मांसपेशियों के स्वामी थे लेकिन तकनीक ने हमें ऐसे उपकरण दिए कि अब आम आदमी पेड़ों पर चढ़ना, पहाड़ों से उतरना, नदियों में तैरना लगभग भूल चुका है। मनुष्य की मांसपेशियां और हड्डियां उतनी मजबूत नहीं रही हैं ,जितनी की 50-60 साल पहले थी। क्या मनुष्य की सोचने की क्षमता भी धीरे-धीरे कमज़ोर हो जाएगी। जब मशीन सोचने लगेगी और निर्णय देने लगेगी तो वह मशीन भी कुछ लोगों के हाथों में होगी इसलिए वह भी पूर्वाग्रह से ग्रसित होगी इसलिए क्या निर्णय की क्षमता भी विश्व के चंद लोगों के हाथों में आ जाएगी। यह सब संशय कृत्रिम बुद्धिमत्ता के साथ जुड़े हुए हैं।

अब हम ए.आई.के परिप्रेक्ष्य में विज्ञान नैतिकता और धार्मिकता की अवधारणाओं को समझने की कोशिश करते हैं। विज्ञान की गति पदार्थ है। विज्ञान पदार्थ के रहस्य को निरीक्षण और परीक्षण के आधार पर उजागर करता है।[2] विज्ञान ने जड़ जगत के रहस्यों से पर्दा उठाया और पदार्थ को उन रूपों में प्रस्तुत किया जिसने मनुष्य को एक सुविधाजनक जीवन प्रदान किया लेकिन इस खोजबीन में विज्ञान यह भूल गया कि यह सारी ही खोज और उपलब्धि अपने आप में साध्य नहीं है वरन् मनुष्य के लिए साधन है। यह अपने आप में मूल्यवान नहीं है बल्कि मनुष्य के संदर्भ मे, उसके हित में मूल्यवान है। विज्ञान अपनी सफलता के पथ पर इतनी तेजी से अग्रसर हुआ की कब मानवता उसके पैरों तले कुचल गई उसको अंदाजा ही नहीं हुआ।इसका परिणाम है विज्ञान ने अनेक सुविधाजनक उपकरण बनाए वहीं दूसरी और ऐसे आयुध और हथियार भी बनाएं जिसने हजारों मनुष्यों को मौत के घाट उतार दिया। तरह-तरह की दवाइयां बनाई जिनसे मानव जीवन सुरक्षित हुआ लेकिन दूसरी तरफ खतरनाक बमों का ढेर भी लगा दिया जो इस पृथ्वी पर सात बार संपूर्ण जीवन नष्ट कर सकते हैं। विज्ञान ने अमृत बनाया और विष भी बना दिया। इससे ऐसा प्रतीत होता है कि विज्ञान सिर्फ मनुष्यता की भलाई पर ही काम नहीं कर रहा है। इसके दो मुख्य कारण रहे हैं। एक विज्ञान की शक्ति सिर्फ वैज्ञानिक के पास नहीं रही बल्कि यह शक्ति राजनेताओं के हाथों में रही जिन्होंने अपनी महत्वाकांक्षाओं और अहंकार से विज्ञान को नियंत्रित किया और किया जा रहा है। दूसरा विज्ञान की हर खोज का परम लक्ष्य मानव का विकास है। उसकी कोई भी खोज उसकी कोई भी तकनीक अपने-आप में परम लक्ष्य नहीं हो सकती यह विज्ञान की प्रकृति में निहित है। इसलिए ए. आई.भी मनुष्य के विकास में जहां तक अपनी भूमिका निभाता है वहां तक उसकी सार्थकता है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता की वजह से मानव जीवन और अधिक विकसित सुखद और आनंद में होना चाहिए लेकिन अगर इस मशीन की वजह से मानव जीवन और अधिक यांत्रिक, परनिर्भर होकर अपनी गरिमा खोता है तो हमें इस पर पुनर्विचार करने की आवश्यकता हो सकती है। वैज्ञानिकों को यह बात समझने की नितांत आवश्यकता है

ए. आई. के संदर्भ में अब हम दूसरी अवधारणा नैतिकता को समझने का प्रयास करते हैं। नैतिकता मनुष्य को उचित या अनुचित का बोध कराती है।[3] मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। वह अन्य मनुष्यों के साथ रहता है। यह साथ कैसे सामंजस्य पूर्ण हो ।सौहाद्रपूर्ण हो कि वह एक दूसरे के साथ रहकर जीवन शांतिपूर्ण व्यतीत कर सकें इसके लिए कुछ मापदंड नैतिकता प्रदान करती है। जब मनुष्य किन्हीं परिस्थितियों में घिर जाता है तो उसे क्या करना

RAWATSAR P.G. COLLEGE
'Sanskriti Ka Badlta Swaroop Aur AI Ki Bhumika' (SBSAIB-2025)
DATE: 25 January 2025
International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
Multidisciplinary, Multilingual, Indexed, Double-Blind, Open Access, Peer-Reviewed,
Refereed-International Journal, Impact factor (SJIF) = 8.152

चाहिए इसका मार्गदर्शन नैतिकता प्रदान करती है। इसलिए नैतिकता भी अपने आप में साध्य नहीं बल्कि वह शांतिपूर्ण सह अस्तित्व के लिए मनुष्य की सहायक है।कृत्रिम बुद्धिमत्ता मनुष्य के इस सहजीवन को, इसी परस्पर निर्भरता को और अधिक पुष्पित और पल्लवित कर सकती है। शिक्षा, चिकित्सा, ग्रामीण विकास, बच्चों का पालन पोषण, वृद्धों की देखभाल, सुरक्षा, आदि के क्षेत्र में मनुष्य कृत्रिम बुद्धिमत्ता का प्रयोग कर न सिर्फ अपने जीवन को सुखद कर सकता है बल्कि अपने सामाजिक ताने-बाने को भी और मजबूत बना सकता है।

तीसरी अवधारणा है धार्मिकता। प्रस्तुत पत्र में धर्म का अर्थ रिलिजन, संप्रदाय या पंथ नहीं है। प्राचीन भारतीय परंपरा में धर्म का जो अर्थ लिया गया था , वही अर्थ इस पत्र में लिया गया है। जो धारण करने योग्य है वह धर्म है।[4] यहां पर प्रश्न उठता है कि क्या धारण करने योग्य है। इस प्रश्न पर विचार करने से ऐसा प्रतीत होता है कि मनुष्य एक स्वचेतन प्राणी है और अगर मानव इतिहास पर दृष्टि डालें तो हमें ऐसे अनेक साक्ष्य मिलते हैं कि यह स्वचेतन प्राणी परम चेतनता को भी उपलब्ध हो सकता है। मनुष्य की चेतना विकसित होते होते उस सीमा तक विकसित हो सकती है कि वह असीम हो सकता है। उसका जीवन सत्य, शुभ और आनंद से परिपूर्ण हो सकता है। वेद और उपनिषद के ऋषि ,महात्मा बुद्ध, महावीर स्वामी ,ईसा मसीह, पैगंबर मोहम्मद, गोरखनाथ कबीर ,मीरा, राबिया, रमन महर्षी, रामकृष्ण परमहंस विवेकानंद , जे .कृष्णमूर्ति आदि ऐसे अनेक संत और महात्माओं को हम जानते हैं। अतः मनुष्य की चेतना के इस विस्तार की ,उसके जीवन को पूरी तरह से खिला देने के लिए जो कुछ भी सहायक है। वह सब धारण करने योग्य है और वही धर्म है। धर्म की गति भीतर की ओर है। वह चेतना के विस्तार और चेतना के विकास के लिए प्रयासरत है। विज्ञान की गति भौतिक जगत है और वह जड़ पदार्थ को समझने और उसको उन रूपों में डालने के लिए प्रयासरत है जिससे मनुष्य के लिए यह संसार सुविधाजनक हो सके। नैतिकता की गति मानवीय संबंधों में है। यह मनुष्य को समाज में शांति और सामंजस्य पूर्ण जीवन देने के लिए प्रयासरत है। हम इन तीनों ही अवधारणाओं पर जब ए.आई के संदर्भ में विचार करते हैं तो इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता को हमें इस परिपेक्ष में समझना होगा कि इन तीनों के अंतरसंबंध के केंद्र में मनुष्य है। जब विज्ञान , नैतिकता और धार्मिकता तीनों क्षेत्र आपस में संबंधित होकर एक दूसरे के पूरक बनकर एक दूसरे को सहायता और सहारा देते हुए अपने केंद्र में स्थित मानव जीवन के विकास, उसकी खुशी और उसके आनंद के लिए कार्य करेंगे तभी इन क्षेत्रों की सार्थकता है। इसलिए धर्म को विज्ञान का प्रतिद्वंदी बनने की बजाय या विज्ञान के क्षेत्र में दखलंदाजी करने के बजाय अपने क्षेत्र में कार्य करते हुए विज्ञान की मदद लेते हुए चेतना के रहस्यों को समझने उसको विस्तार देने के लिए कार्य करने की आवश्यकता है। वही विज्ञान को जड़ पदार्थ में ही गुम हो जाने के बजाय हमेशा अपने आप को एक साधन के रूप में मानकर परम लक्ष्य मनुष्य के हित व आनंद को ध्यान में रखकर काम करने की आवश्यकता है। नैतिक नियम अपने आप में कभी भी परम लक्ष्य नहीं हो सकते। उसे हमेशा ही मानव हित में लचीला होने की आवश्यकता है। इन तीनों क्षेत्र के दायरे और उनके अंतर संबंधों के आधार पर हम कृत्रिम बुद्धिमत्ता के लिए यही कह सकते हैं कि इसका उपयोग विज्ञान जड़ को समझने में, धर्म चेतना को समझने में और चेतन को विस्तार देने में और नैतिकता मानवीय पारस्परिक संबंधों को और सुंदर बनाने में कर सकता है और अगर ऐसा करता है तो ए. आई की सार्थकता है।अब मनुष्य को सर्वप्रथम रखना होगा। इसके लिए जरूरी है कि धर्म परलोक का और विज्ञान पदार्थ का मोह छोड़े।[5] नैतिकता सिद्धांतों को नहीं पकड़े रहे। तीनों मिलकर ऐसा वातावरण निर्मित करे कि मानवीय जीवन को स्वास्थ्य और संगीत दे सके।

संदर्भः

1.https://www.ibm.com
2.https://www.britannica.com
3.नीतिशास्त्र के मूल सिद्धांत- डॉ.वेद प्रकाश वर्मा, एलायड पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली, 2016
4.भारतीय दर्शन - डॉ.नन्द किशोर देवराज,उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान, लखनऊ,1999
5. जिन खोजा तिन पाईया गहरे पानी पैठ - ओशो, ओशो इंटरनेशनल फाउंडेशन, पुणे